Subject :- Sociology Date :- 02/07/2020

Class :- 12 वीं

Topic :- पश्चिमीकरण एवं इसके प्रभाव व विशेषताएँ

By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga
9507941619

Online Study Material No:- 98

पश्चिमीकरण
(Westernization)

सामाजिक परिवर्तन प्रायः सांस्कृतिक संघात एवं सामाजिक सम्पर्क के माध्यम से होते है। इसी प्रकार के सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया को पश्चिमीकरण कहा गया या Westernization के नाम से जाना जाता है। पश्चिमीकरण भारतीय समाज में विद्यमान वह प्रक्रिया है जो प्रायः पश्चात् समाज एवं संस्कृति के सम्पर्क में आने से सम्पन्न हुआ है।

पश्चिमीकरण से आशय उन सामाजिक परिवर्तनो से है जो भारतीय समाज में ब्रिटीश शासनकाल में घटित हुये है। इसके अतिरिक्त पश्चिमीकरण के अन्तर्गत वे सभी परिवर्तन निहित है जिनका सम्बन्ध भारतीय प्रोद्योगिकी, सामाजिक संस्थाओं, विचारधाराओं तथा विभिन्न सामाजिक नैतिक मूल्यों से है।

बोसचालके शब्दों में पश्चिमीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज पाश्चात् देशों की संस्कृति का अनुकरण करता है। अर्थात यूरोप, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि देशों के संस्कृति का अनुकरण करना ही पश्चिमीकरण है।

Charecteristics of Westernization

Dr. M. N. Shree Niwas के अनुसार पश्चिमीकरण की निम्नांकित विशेषताएँ है:-

1. नैतिक दृष्टि से तटस्थ :- Dr. M. N. Shree Niwas के अनुसार- "आधुनिकीकरण से भिन्न पश्चिमीकरण शब्द नैतिक दृष्टि से तटस्थ है। इसका प्रयोग अच्छे या बुरे होने को सूचित नहीं करता है जबकि आधुनिकीकरण साधारणतः इस अर्थ में प्रयुक्त होता है कि वे अच्छे है।"

2. पश्चिमीकरण की सीमायें :- सामान्य रूप से पश्चिमीकरण का सम्बन्ध पश्चात् संस्कृति से ही जोड़ लिया जाता है। यह विचार अपने आप में सत्य है, परन्तु इसकी अपनी

Ajanta Oxford
Scanned with CamScanner

(2)

कुछ सिमाये है। पश्चिमीकरण एवं पश्चात संस्कृति में भी अन्तर है। पश्चात संस्कृति के सभी तत्व मौलिक दृष्टि से पश्चिम की उपज नही है बल्कि इसमें अनेक तत्व भारत एवं एशिया के अन्य देशों में उत्पन्न हुये है। उदाहरण के तौर पर कहा जा सकता है कि ईसाई धर्म की उत्पत्ति एशिया से हुयी थी, परन्तु वर्तमान भारत में यह पश्चिम के माध्यम से प्रसारित हुआ है।

3. पश्चिमीकरण व्यापक जटिल और बहुस्तरीय प्रक्रिया है :- पश्चिमीकरण के माध्यम से भारतीय समाज एवं संस्कृति प्रभावित भी हुआ तो कही संस्कृति के प्रभाव को रुपान्तरित भी किया गया है। उदाहरणार्थ - भारतीय कारीगर जहाँ एक ओर मशीन से औद्योगिक उत्पादन करता है वहीं दूसरी ओर मशीन फूलमालायें भी पहनाता है एवं टिकाएँ भी लगाता है।

4. चेतन और अचेतन प्रक्रिया के रुप में भी पश्चिमीकरण की प्रक्रिया का प्रारंभ हुआ है :- Shree Nivas के अनुसार- "भारतीयों को केवल स्याही सोख का दर्जा देना तो स्पष्ट ही वाहियात है, यह कहना ठीक नही कि जिस किसी बात के सम्पर्क में वे आये थे सब उन्होने आत्मसात कर ली और जो कुछ आत्मसात किया उसे दूसरों तक सम्प्रेषित कर दिया।"

उपरोक्त कथनों से स्पष्ट होता है कि पश्चिमीकरण को एक सचेतन प्रक्रिया कह जा सकता है, परन्तु इसके साथ ही अनेक क्षेत्र में यह क्रिया अचेतन रुप मे चल रही है।

5. परिवर्तन की मन्द प्रक्रिया के रुप मे :- लगभग 150 वर्ष की लम्बी अवधि मे यह प्रक्रिया सम्पन्न हुयी है जिसमे अति मन्द गति से सामाजिक परिवर्तन हुआ है।

पश्चिमीकरण का प्रभाव

पश्चिमीकरण भारतीय समाज को अत्यंत व्यापक और गहन रुप मे प्रभावित किया है। यह प्रभाव मुख्यरुप से जाति प्रथा, छुआछूत, समाज में स्त्रियों की स्थिति, विभिन्न सांस्कृतिक रीति- रीवाज, विवाह, परिवार आदि में देखा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

1. जाति संरचना में परिवर्तन या प्रभाव :-

A. औद्योगिकरण तथा जाति प्रथा :- पश्चिमीकरण से प्रभावित होकर अंग्रेजो ने भारत में विभिन्न प्रकार के बड़े-बड़े औद्योगिक संस्थाओं की स्थापना की थी और अंग्रेजो ने बिना भेद-भाव किये सभी जातियों के व्यक्ति को काम पर लगाया था।

B. नगरीकरण तथा जाति प्रथा :- औद्योगिकरण के समान ही भारत में नगरीकरण को प्रोत्साहित करने का श्रेय अंग्रेजी सरकार को है। नगरीकरण ने भारतीय जाति प्रथा के बन्धनो को शिथिल कर दिया।

C. यातायात तथा जाति प्रथा :- पश्चिमीकरण के माध्यम से आधुनिक तीव्रगामी यातायात के साधन विकसित हुये है। आज बस एवं रेलगाड़ी सभी जाति के लोग एक ही साथ यात्रा करते है। टीकट लेकर कोई भी ब्राह्मण-शूद्र के साथ बैठ सकता है तथा जातिगत भेद-भाव समाप्त हो गया है।

D. पश्चात सभ्यता एवं जाति प्रथा :- पश्चिमी सभ्यता अपनाकर सभी जातियाँ एक ही रंग में रंगी प्रतीत होने लगी है तथा उनमें जातिगत मौलिक अन्तर समाप्त हो गया है।

2. भारतीय स्त्रियों पर पश्चिमीकरण का प्रभाव :-

A. पर्दा प्रथा का उन्मूलन :- भारतीय स्त्री पर्दे में रहती थी। पश्चिमी सभ्यता के विकास एवं स्त्री के शिक्षा के विकास ने स्त्रियों में पर्दा प्रथा को समाप्त कर दिया गया। हिन्दू स्त्री तो पर्दा प्रथा को समाप्त कर ही दिया साथ ही मुस्लिम स्त्रियों ने कुछ हद तक पर्दा प्रथा का बहिष्कार किया।

B. समाज में समानता की स्थिति :- भारत में ब्रिटीश शासन ने हर प्रकार से स्त्री को समानता का अधिकार प्रदान कर दिये गये। उदाहरणार्थ- स्त्रियों को मतदान का अधिकार, गोद लेने का अधिकार, पुनर्विवाह का अधिकार आदि। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जहाँ एक ओर स्त्रियों को समानता का अधिकार प्राप्त है वहीं दूसरी ओर आज स्त्रियाँ अनेक पदों पर आसिन है।

3. भारतीय सामाजिक संरचना में परिवर्तन या प्रभाव :-

पश्चिमीकरण ने भारतीय सामाजिक संरचना को भी परिवर्तित किया है। इससे पूर्व भारतीय सामाजिक

Scanned with CamScanner

व्यवस्था जाति व्यवस्था पर आधारित थी। विवाह के सम्बन्ध भी जातिगत नियमों द्वारा तय होते थे, परन्तु पश्चिमीकरण ने भारतीय जाति व्यवस्था को शिथिल कर वर्ग व्यवस्था को जन्म दिया है।

4. विवाह पर पश्चिमीकरण का प्रभाव :-

A. विवाह के आधार में :- पश्चिमीकरण से पूर्व विवाह को एक धार्मिक संस्कार माना जाता था, किन्तु अब यह एक सामाजिक समझौता मात्र रह गया है।

B. जीवनसाथी का मुक्त चुनाव :- पश्चिमीकरण से पूर्व जीवनसाथी का चुनाव माता-पिता करते थे, परन्तु आधुनिक समय में जीवनसाथी का चुनाव स्वयं लड़का या लड़की अपनी इच्छानुसार करता है।

C. विवाह के ढंग में :- पहले जहाँ हिन्दू धर्म में विवाह सात फेरो के बाद, मुस्लिम में निकाह कबूल है के बाद ही मान्य होता था वहीं आधुनिक समय में Cort marriage हो रहा है।

D. बाल विवाह पर प्रतिबन्ध :- सन 1828 ई० से पूर्व बाल विवाह का प्रचलन था वहीं पश्चिमीकरण के परिणाम स्वरुप बाल विवाह पर रोक लग गया है।

E. देर से विवाह करने का प्रचलन :- जहाँ एक ओर भारत में बाल विवाह पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया वहीं दूसरी ओर विलम्ब विवाह का प्रथा भी पश्चिमीकरण के कारण प्रारंभ हो गया है।

F. एक विवाही का प्रचलन :- प्राचीन भारत में बहुपत्नी, बहुपति विवाह का प्रचलन था वहीं पश्चिमीकरण के प्रभाव से एक विवाही प्रथा का प्रचलन हो रहा है।

5. परिवार पर पश्चिमीकरण का प्रभाव :-

A. संयुक्त परिवार का विघटन :- पश्चिमीकरण से पूर्व भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का प्रचलन था। आज के वर्तमान समय में व्यक्तिवादिता का विशेषस्थान है। व्यक्तिवादिता की प्रवृत्ति ने संयुक्त परिवार में विघटन की स्थिति उत्पन्न कर दिया जिससे संयुक्त परिवार का स्थान एकाकी परिवार ने ले लिया है।

B. परिवार का सीमित आकार :- जहाँ एक ओर सामाजिक परिवर्तन में पश्चिमीकरण के प्रभाव से संयुक्त परिवार का विघटन हुआ है वहीं दूसरी ओर परिवार का आकार भी सिमित हो गया है।

Scanned with CamScanner

5. विवाह के स्थायित्व में कमी :- प्राचीन काल से ही विवाह स्त्री एवं पुरुषों के बीच का सम्बन्ध अटूट था लेकिन आज पश्चिमीकरण के प्रभाव से (Marriage divorce) विवाह हो रहा है।

6. भारतीय रीति-रीवाजों पर पश्चिम का प्रभाव :- पश्चिमीकरण के फलस्वरूप हमारे रीति-रीवाज, विवाह, खान-पान, वेशभूषा आदि में भी परिवर्तन हुआ है। उदाहरण के तौर पर विवाह को पहले एक धार्मिक संस्कार माना जाता था, किन्तु आज यह सामाजिक समझौता मात्र है। खान-पान के क्षेत्र में केक, डबलरोटी, अंडा, माँस, मदिरा आदि पश्चिमीकरण का प्रभाव है। श्वेत ब्राह्मण आज भी खाना में नमक अलग से खाते हैं। पहले भारत में लोगों का प्रमुख पहनावा धोती-कुर्ता था लेकिन आज इसमें परिवर्तन हुये हैं। लोग धोती-कुर्ता के स्थान पर कोट-पैन्ट पहनते हैं।

7. संस्कृति के क्षेत्र में :-

A. भाषा के क्षेत्र में पश्चिम का प्रभाव :- आज भारत में भी अंग्रेजी भाषा का वृहद स्तर पर प्रचार-प्रसार हुआ है। भारतीय व्यक्ति भी अंग्रेजी के इन शब्दों का धरल्ले से प्रयोग करता है, जैसे :- Plateform, Latter box, station, school, college, university, ticket, scooter, cycle, Motor etc.

B. साहित्य के क्षेत्र में :- आज के भारतीय साहित्य में रोमांसवाद अस्तित्ववाद मनोविश्लेषणवाद का विशेष महत्व है, यह पश्चिमीकरण का ही एक रूप है।

C. कला के क्षेत्र में :- भवन निर्माण, चित्रकला स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी आज पश्चिमीकरण का प्रभाव पड़ा है।

Dr. S.N. Choudhary
Marwari College, Darbhanga

Ajanta Oxford
Scanned with CamScanner